उत्तर आधुनिकतावाद

उत्तर आधुनिकतावाद के लिए अंग्रेजी में 'पोस्टमाडर्निज्म' (Post Modernism) शब्द प्रयुक्त होता है। उत्तर आधुनिकता का शाब्दिक अर्थ है - आधुनिकता का उत्तर पक्ष अथवा आधुनिकता की समाप्ति के उपरांत एक नई स्थिति या विचारधारा। कुछ विद्वान् उत्तर आधुनिकता को आधुनिकता का अगला सोपान मानते हैं तो कुछ उत्तर आधुनिकता को आधुनिकता से मुक्ति बताते है। उत्तर आधुनिकता की परिभाषा एवं स्वरूप का प्रश्न इतना पेचीदा एवं विवादास्पद है कि उसे किसी एक परिभाषा के चौखटे में न समेटा जा सकता है और न उसका कोई निश्चित स्वरूप निर्धारित किया जा सकता है। उत्तर आधुनिकता शब्द का प्रचलन बीसवीं शताब्दी के सातवें आठवें दशक में हुआ। 1967 ई. जान बॉर्थ ने 'द लिटरेचर ऑफ ऐक्सॉशन' शीर्षक लेख में उत्तर आधुनिकता शब्द का सर्वप्रथम कला के संदर्भ में प्रयोग किया था और बाद में एक अन्य लेख 'द लिटरेचर ऑफ रिप्लैनिशमेंट' में इसे विस्तार दिया था और इसी के बाद यह पद प्रचलन में आया। ल्योतार तथा फ्रेडरिक जेमसन ने उत्तर आधुनिकता को विकसित किया। इसे लोकप्रिय बनाने का श्रेय राबर्ट बेंतरी और जेम्स स्टर्लिंग को है। यूरोप में 20वीं सदी के सातवें दशक के दौरान यह शिद्धत से महसूस किया गया कि आधुनिकीकरण वहाँ के समाज की मूलभूत समस्याओं को समाधान करने में असमर्थ एवं विफल है। फलस्वरूप, यूरोप में एक सशक्त बौद्धिक आंदोलन चला। यूरोप में ज्ञान के परिवर्तित स्वरूप की व्याख्या करते हए ल्योतार द्वारा इसे उत्तर आधुनिकता का नाम दिया गया। सुधीश पचौरी ने उत्तर आधुनिकता के विषय में लिखा है कि— उत्तर - आधनिकता, आधुनिकता का विस्तार भी है और अंतिम बिंदु भी है। वह अनुपस्थिति की उपस्थिति है। वह प्रतिनिधित्व - रहित की उपस्थिति है।उत्तर - आधुनिकता आधुनिकता की तरह ही एक यूरोपीय इतिहास है लेकिन आधुनिकता के दौर से काफी अलग वह एक उत्तर - साम्राज्यवादी स्थिति है। कहीं वह नीत्शे का (अथवा हिंदुओं का?) शाश्वत पुनर्जन्मवाद (ईटर्नल रिटर्न) है, कहीं वह महावृत्तांत (इतिहास) का अंत है, कहीं वह आधुनिकता के केन्द्रवाद का अपकेन्द्रण है, कहीं वह उत्पादन से उपभोक्ता की ओर अपसारण है, कहीं वह देश का अंत है, कहीं वह काल की स्थिति है। कहीं वह राष्ट्र राज्यों की सांस्कृतिक सीमाओं का विगलन है (गैट), कहीं वह एक साथ मुंडलीय और स्थानीयता है, कही वह भूत की जगह आत्म का लौटना है। कहीं वह माध्यमीकृत यथार्थ है, कहीं वह बोध न होने की अबोधता है....वह नितांत चंचल श्रेणी है इसीलिए उसकी एक निश्चित व्याख्या और संरचनावादी ढंग का ऐतिहासिक सूत्रीकरण असंभव है। वह खुद एक उत्तर - संरचना है। विखंडन का विखंडन है।

उत्तर आधुनिकता की मान्यताएँ

उत्तर आधुनिकता की मान्यताएँ— उत्तर आधुनिकता की मुख्य मान्यताएँ इस प्रकार हैं—

1. डॉ . अमरनाथ सिन्हा के अनुसार - "एक व्यापक दृष्टिकोण से उत्तर आधुनिकता के 3 केंद्रीय तत्त्व हैं - पहला समग्रतावादी सार्वभौमिक सत्यों का नकार, दूसरा तर्कवाद का नकार और तीसरा आधुनिकतावाद की सक्षमता का नकार।....उत्तर आधुनिकता सार्वभौमिक समग्रतावादी सत्यों पर प्रश्न चिह्न लगाती है वहीं तार्किकता पर प्रश्न चिह्न खड़ा करती है। उत्तर आधुनिकता में धर्म निरपेक्षता की जगह धार्मिक पहचान है, केंद्र की जगह जातिवादी, स्त्रीवादी जैसे उपकेद्रों की वापसी है।

2. उत्तर आधुनिकता संपूर्णता (Totality), अधिवृत्तांतों, महावृत्तांतों (रामायण, महाभारत, बाइबिल इत्यादि) एवं मूल्य - मीमांसा का खंडन करती है। मूल्यहीनता की पक्षधर उत्तर आधुनिकता की दृष्टि यह स्वीकार करती है कि कुछ भी सम्पूर्ण नहीं होता है। यह विशेषहीन वृत्तांत का पक्षधर है।

3. किसी साहित्यिक कृति के निर्माण अथवा पाठ - संरचना में उत्तर आधुनिकता पूर्व निर्धारित नियमों, परंपराओं और मूल्यांकन का खंडन करती है।

4. उत्तर आधुनिकता में तर्क, रूप, यथार्थ, इतिहास सबके प्रति नकारात्मक भाव है। इसे एक अराजकतावादी निहलिस्ट प्रवृत्ति कहा गया। उत्तर आधुनिकता ने मार्क्सवाद और मनोविश्लेषण को भी नकार दिया।

5. उत्तर आधुनिकता व्यक्ति - केंद्रित सिद्धांत है। यह यथार्थ से छाया की ओर छलांग है। इसमें भ्रांति की प्रशस्ति है।

6. उत्तर आधुनिकता में स्त्रीवादी चेतना पुरुष - प्रभुत्व की विरोधिनी है।

7. उत्तर आधुनिकतावादियों का भाषा - चिंतन पारंपरिक भाषा - चिंतन से सर्वथा पृथक् है। प्राचीन भाषाशास्त्रियों की दृष्टि में शब्द एवं अर्थ का अटूट, अविभाज्य एवं नित्य संबंध था किंतु उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टि शब्द एवं अर्थ में कोई मूलभूत संबंध नहीं मानता है। उनकी दृष्टि में अपनी कल्पनानुसार किसी शब्द का अर्थ गढ़ा जा सकता है। वे इसे शब्द की जनतांत्रिकता कहते हुए यह मान्यता प्रतिपादित करते हैं कि लेखक चाहे जिस उद्देश्य एवं अर्थ को ध्यान में रखकर रचना करे, पाठक उसे वास्तविक संदर्भ से पृथक् हटकर भिन्न संदर्भ में पढ़ने के लिए स्वतंत्र है।

8. उत्तर आधुनिकतावाद में साहित्य, संस्कृति, दर्शन, समाज, मनोविज्ञान इत्यादि को तर्कवादी सिद्धांत के विखंडन द्वारा समझा जाता है।

9. उत्तर आधुनिकता ने लेखक के अंत की घोषणा कर पाठक के युग को प्रधानता दी। यहाँ साहित्य नाम की कोई वस्तु नहीं है। साहित्य, राजनीति, दर्शन, अर्थशास्त्र, विज्ञान इत्यादि सभी पाठ हैं। उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टि उत्तर संरचनावाद के समान भाषा या पाठ को महत्त्व देती है।

10. उत्तर आधुनिकता में अनेक मृत्यु की घोषणा की गई। इनमें लेखक की मृत्यु, इतिहास का अंत, कला का अंत, विचार का अंत, आलोचक की मृत्यु, मनुष्य की मृत्यु इत्यादि मुख्य है। विचारधारा के अंत की घोषणा डैनियल बेल ने 1960 में की तो देरिदा ने मनुष्य की मृत्यु की घोषणा 'दी एंड ऑफ मैन' में की। इसी प्रकार रोलां बार्थ ने 1968 में अपनी पुस्तक The death of Author में लेखक के मृत्यु की घोषणा की।

समासतः रेणु वर्मा के शब्दों में कहा जा सकता है कि – "वस्तुतः उत्तर आधनिकतावाद में औद्योगिकीकरण, राजनीतिकरण, भूमंडलीकरण, उपनिवेशवाद, उपभोक्तावाद, बाजारवाद, नारीवाद, नस्लदलितवाद के मूल चिंतन में गहरा मगहरा मोहभंग उपजा है। परंपरागत जीवन मूल्य खो गये। इसमें साहित्य की आनंदानुभूति खत्म हो चुकी है। साहित्य एक लेखन मात्र रह गया है, जिसमें कुछ भी किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। लेखक और पाठक के मध्य कोई अंतःसंबंध नहीं बनते। लेखक का दृष्टिकोण और पाठक का दृष्टिकोण इस विषय - वस्तु पर विभिन्न हो सकता है इसलिए साहित्य की सभी विधाएँ मात्र पाठ हैं। उत्तर आधुनिक विचारक 'पाठ' के अतिरिक्त किसी चीज की सत्ता को नहीं स्वीकारते।